प्रस्तावना

वैश्वीकरण के इस युग में जनसंचार, प्रौद्योगिकी तथा द्रुतगामीयातायात के साधनों ने कभी बहुत बड़े लगने वाले संसार को बहुत छोटा कर दिया है। आज दुनिया भर के लोग एक दूसरे के करीब आने की कोशिश कर रहे हैं, एक दूसरे को समझने की कर रहे हैं तथा एक दूसरे के विचारों, संस्कृतियों, साहित्य और दर्शन, को जानने के के साथ-साथ भाई चारा बढ़ाने के कोशिश भी कर रहे हैं। ऐसे में उन्हें ज़रूरत पढ़ रही है एक दूसरे की भाषा सीखने की। वर्तमान युग में जहाँ विभिन्न देशों के बीच की दूरियाँ और सीमाएँ सिमटकर रह गई है, उसका मुख्य साधन विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अधिगम द्वारा ही संभव हो पाया है। आज पूरा विश्व विकास करने की होड़ में लगा हुआ है और सभी देश पूरे विश्वभर में हो रहे अनुसंधानों और शोध कार्यों से प्राप्त ज्ञान-विज्ञान की जानकारियों जो जल्द-से-जल्द हासिल करना चाहते हैं, ऐसी स्थिति में विदेशी भाषा के विशेषज्ञों की जो अनुवादक और निर्वचक के रूप में कार्य करते हैं उनकी आवश्यकता काफी बढ़ रही है। आज भारत एक बहुत ही विकासशील और आर्थिक रूप से मज़बूत देश बनता जा रहा है। यही कारण है कि, आज भारत देश सामाजिक,व्यापारिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से बहुत तेज़ी और व्यापक पैमाने पर विश्वभर के सभी देशों से जुड़ रहा है। अत: विदेशी भाषा पाठ्यक्रमों में अधिगम के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ा है। चीनी, स्पेनिश, जापानी, जर्मन, रूसी, कोरियन, अरबी, फ्रेंच, अंग्रेज़ी आदि भाषाएँ विश्व में विदेशी भाषा के रूप में सबसे ज़्यादा सीखी जाने वाली भाषाएँ हैं। इसलिए विविधता में एकता को व्यावहारिक रूप देने के लिए, परस्परक संपर्क स्थापित करने के लिए विदेशी भाषाओं के रूप में अध्ययन-अध्यापन बड़े पैमाने पर हो रहा है। यह अनुभव किया जा रहा है कि देशों के बीच भाषा के रूप में जो दूरियाँ बनी हुई हैं उन्हें विदेशी के अधिगम, अध्ययन-अध्यापन के माध्यम से अपने विचारों एवं भावों, अपनी आवश्यकताओं तथा संवेदनाओं को प्रकट करने तथा भावात्मक एकता स्थापित करने के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में विकास करने की आवश्यकता है। इसके लिए विदेशी भाषा के पाठ्यक्रम में अधिगम को उपयुक्त समझा गया है। इस प्रकार आज के इस वैश्वीकृत युग में विदेशी भाषा पाठ्यक्रम में अधिगम का अपना विशेष महत्व है।

प्राचीन काल में एक से अधिक भाषाओं को जानना मनुष्य के लिए प्रतिष्ठा का विषय माना जाता था। परंतु साधनों एवं प्रेरणा के अभाव में अधिक व्यक्तियों की रूचि इस ओर नहीं थी। लेकिन आज स्थिति बदल गई है। आज मनुष्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक कारणों से अन्य भाषा अर्थात् विदेशी भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन तथा अधिगम में रूचि दिखा रहा है। इसी उद्देश्य से छात्रों में विदेशी भाषाएँ सीखने की रूचि बढ़ती नज़र आ रही है। बढ़ती रूचि के कारण ही छात्रों में विदेशी भाषा पाठ्यक्रमों के अधिगम में रूचि बढ़ती जा रही है।

भाषा का शिक्षण वस्तुत: भाषाई कौशलों का शिक्षण है। भाषा को कौशल प्रधान विषय कहा गया है। भाषा सीखने और सीखने का उद्देश्य मुख्यत: इन कौशलों की आदत विकसित करना है। मातृभाषा के शिक्षण कौशलों में बालक जैसे: बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना कौशलों में सहज रूप से अधिकार प्राप्त कर लेता है। औपचारिक शिक्षका के क्रम में वाचन और लेखन तथा वाचन का अभ्यास कराया जाता है। लेकिन जब अन्य भाषा सीखने हैं तो उसमें चारों कौशलों का शिक्षण आवश्यक होता है। इस दृष्टि से कौशलों का महत्व स्पष्ट हो जाता है कि इन कौशलों के आधार पर ही भाषा व्यवहार की कुशलता का विकास संभव है। भाषाई कौशलों के माध्यम से ही अन्य भाषा की सामाजिक संस्कृति से परिचित होते हैं। जब भी कोई व्यक्ति विद्यार्थी विदेशी भाषा सीखता है तो उसे भाषा शिक्षण के इन चारों कौशलों में निपुणता हासिल करना अनिवार्य होता है।

आधुनिक और औद्योगिकीकरण ने पूरे विश्व को एक परिवार में बदल दिया है। आज विभिन्न भाषाओं का शिक्षण पूरे विश्व में हो रहा है। विश्व और भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में रूसी, जर्मन, फ्रेंच, जापानी, स्पेनिश, चीनी, इटेलियन जैसी भाषाओं के शिक्षण की समुचित व्यवस्थ है। दो भाषों में दक्ष व्यक्ति दोनों भाषाओं के बीच परस्पर अनुवाद करने में समर्थ होता है। अनुवाद का क्षेत्र आज बहुत व्यापक हो गया है। एक ओर विभिन्न भाषाओं के सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद विभिन्न देशों के भाषाओं में होना लगा है तथा विदेशी भाषाएँ भी अनुवाद के लिए स्रोत या लक्ष्य भाषा के रूप में अपनाई जाने लगी हैं। दो भाषाओं में दक्षता भाषा-शिक्षण के द्वारा ही मिलती है। यह शिक्षण विद्यार्थी के अनुभव कौशल को भी प्रवीणता प्रदान करता है तथा अपनी मातृभाषा और अन्य भाषा के साहित्य को समझने में दक्षता प्रदान करता है। अत: अन्य अर्थात विदेशी भाषा शिक्षण में अनुवाद की एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट भूमिका होती है। अनुवाद की प्रक्रिया भाषा अधिगम की प्रक्रिया से जुड़ी हुई है और अनुवाद की प्रक्रिया

को बोधन और संप्रेषण की प्रक्रिया माना जाता है। इसलिए भाषा शिक्षण में अनुवाद विधि एक महत्वपूर्ण और कारगर भूमिका निभाती है। भाषा शिक्षण को यदि विस्तृत रूप दिया जाए तो भाषा सीखने का अर्थ अनुवाद सीखना माना जा सकता है। इस प्रकार विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अधिगम में अनुवाद की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

भाषा एक ऐसा साधन होती है, जो सिर्फ भिन्न भाषाओं के बीच ही नहीं, बल्कि दो देशों के बीच भी संपर्क सेतु काम करती है। आज समाज में सिर्फ एक भाषा नहीं, कई भाषाएँ सीखने की ललक युवा छात्रों में दिखाई देती है, कारण है कैरियर निर्माण। एक से अधिक भाषा सीख कर कोई भी शख़्स अपना भविष्य बेहतर बना सकता है। रचनात्मक प्रतिभा के धनी, बहिमुर्खी प्रतिभा के धनी छात्र विदेशी भाषा सीख कर अनुवाद के क्षेत्र में अपना भविष्य इंटरप्रेटर तथा अनुवादक बनकर संवार सकते हैं। कैरियर का यह कार्यक्षेत्र जहाँ आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है, वहीं एक क्षेत्र में रोज़गार के अनेक अवसर भी मौजूद हैं। यही कारण है कि, आज देश के अनेक विश्वविद्यालयों एवं दूतावासों में विदेशी भाषा के पाठ्यक्रम बड़े पैमाने जाते हैं, जिन्हें सीखकर संबंधित भाषा में प्रवीणता हासिल जी सकती है। इस प्रकार भी विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अधिगम में अनुवाद की एक अहम् और महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

शोध की परिकल्पना

आज के आधुनिक, वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में मातृभाषा के साथ-साथ कम से कम एक विदेशी भाषा का ज्ञान होना भी अनिवार्य होता जा रहा है। आज के इस आधुनिक दौर को अनुवाद का दौर कहा जाए तो कोई गलत बात नहीं होगी। विश्व भर में फैले अपार ज्ञान संपदा का प्रचार-प्रसार करने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दो भाषाओं में निपुण व्यक्ति ही एक अच्छा अनुवाद कर सकता है। विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अधिगम में अनुवाद किस तरह एक विशिष्ट भूमिका निभाता है यही जाने के लिए मेरी उत्सुकता और जिज्ञासा ने मुझे लघु-शोध प्रस्तुत विषय की ओर प्रेरित किया। आज विभिन्न देश-विदेश के विद्यार्थियों का विदेशी भाषा सीखने के प्रति रूचि बढ़ी जा रही है। आज शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अलग-अलग विदेशी भाषाओं के पाठ्यक्रम में अध्ययन-अध्यापन हो रहे हैं। विदेशी भाषा शिक्षण के द्वारा अनुवाद के क्षेत्र में रोज़गार की संभावनाएँ बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। अत गुरुजनों से परामर्श के बाद 'विदेशी भाषा पाठ्यक्रम में अधिगम अनुवाद की भूमिका' विषय बनाने का निर्णय लिया गया।

शोध का महत्व

आज के समय की माँग को देखते हुए तथा व्यावहारिकता की दृष्टि से अनुवाद और विदेशी भाषा शिक्षण की आवश्यकता आज हर क्षेत्र के विकास में है। आज अनुवाद और विदेशी भाषा शिक्षण का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। अनुवाद और अन्य भाषा शिक्षण में रोज़गार की अनेक संभावनाएं हैं। शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अनुवाद तथा विदेशी भाषा पाठ्यक्रमों के अध्ययन-अध्यापन के केंद्र खुल रहे हैं। इस समय विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के रूप में जे.एन.यू, दिल्ली, हिंदी विश्वविद्यालय, दिल्ली, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, और अंग्रेज़ी तथा विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद आदि जगहों पर अध्ययन-अध्यापन व्यवस्थित रूप से किया जा रहा है।

विदेशी भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में अनुवाद एक प्रक्रिया के रूप में कार्य करता है। विदेशी भाषा शिक्षण में अनुवाद की एक विशिष्ट भूमिका है। विदेशी भाषा शिक्षण में अनुवाद विधि करगार भूमिका निभाती है। वस्तु त अनुवाद विधि के दौरान पाठों का चयन व्याकरणिक जटिलता अर्थात् सुगम से जटिल वाक्यों के अनुक्रम में किया जाता है।

इसमें पहले विदेशी भाषा का मातृभाषा में और बाद में मातृभाषा से विदेशी भाषा में अनुवाद की प्रक्रिया चलती है। इसमें व्याकरणिक नियम, असंबद्ध शब्द, शब्द-भेद की जानकारी और वाक्य अनुप्रयोग अनुवाद के माध्यम से कराया जाता है। इस प्रकार विदेशी भाषा के अधिगम में अनुवाद की भूमिका क्या है ? इसको दिखाने की कोशिश की गयी है।

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य इसी दिशा में उठाया गया है एक छोटा सा कदम है। इस लघु-शोध कार्य द्वारा विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अधिगम में अनुवाद की भूमिका को रेखांकित करना है। इस लघु-शोध कार्य के माध्यम से अनुवाद और विदेशी भाषा पाठ्यक्रम का आपसी संबंध, विद्यार्थियों का विदेशी सीखने के प्रति बढ़ी रूचि और उससे होने वाले लाभ, कैरियर और रोज़गार के अवसर का विचारधारत्मक स्तर पर क्या उपयोगिता है यह जानने का प्रयास किया गया है। इनके आधार पर विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों को एक दिशा मिल सकती है।

शोध की सीमाएँ

प्रस्तुत लघु शोष प्रबंध कार्य के अंतर्गत भाषा शिक्षण और विदेशी भाषा शिक्षण का महत्व, विदेशी भाषा पाठ्यक्रम और अनुवाद का अंतसंबंध, विदेशी भाषा अध्ययन में अनुवाद की भूमिका और विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अधिगम से अनुवाद क्षेत्र में कैरियर और रोज़गार की संभावनाएँ जैसे विषयों को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रविधि

सर्वप्रथम प्रस्तुत लघु शोध कार्य के लिए जिन विद्यार्थियों को सामग्री संकलन के लिए चुना गया है वे भारत, यूगांडा, थाइलैंड, उज्बेकिस्तान, जर्मनी, नॉर्वे, पश्चिम अफ्रीका, स्पेन, इटली, साउथ अफ्रीका, रूस, अमेरिका, वियतनाम, फ्रांस, बेल्जियम आदि देशों के विद्यार्थी विदेशी भाषाएँ पढ़ने के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, अंग्रेज़ी तथा विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद, हैदराबाद में हिंदी, अंग्रेज़ी, स्पेनिश, चीनी, जर्मन, रूसी, जापानी और अरबी भाषा पढ़ने के लिए आए थे। इन विभिन्न देशों और भाषाओं के विद्यार्थियों द्वारा यह वांछित सामग्री प्राप्त की गई है।

सामग्री संकलन

इन विद्यार्थियों तथा उनके शिक्षकों से संपर्क करके लघु-शोध कार्य से संबंधित प्रश्नावली प्राप्त किया गई है। इनमें अधिकतर विद्यार्थियों ने अनुवाद को विदेशी भाषा शिक्षण में एक महत्वपूर्ण और ज़रूरी प्रविधि माना है तथा ज़्यादातर विद्यार्थियों यह मानना है कि, विदेशी भाषा प्रशिक्षण में अनुवाद से संबंधित कार्य का प्रयोग करने से विदेशी भाषा सीखने में सहायता मिलती है और विदेशी भाषा का ज्ञान ज़्यादा समय तक उनके मस्तिष्क में समरण रहता है। अत शोधार्थी ने तीन विश्वविद्यालयों से व्यक्तिगत तथा संस्थागत संपर्क करके विद्यार्थियों को प्रश्नावली को ध्यानपूर्व समझाकर सही रूप से प्रश्नो को भरने के लिए प्रेरित किया। इन सभी से प्राप्त लिखित सामग्री को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

प्रविधि

इस लघु-शोध कार्य के लिए भारत, यूगांडा, थाइलैंड, उज़्बेकिस्तान, जर्मनी, नॉर्वे, पश्चिम अफ्रीका, स्पेन, इटली, साउथ अफ्रीका, रूस, अमेरिका, फ़्रांस, बेल्जियम के लगभग 60 विद्यार्थियों से लिखित प्रश्नावली के रूप में सामग्री संकलित की गई है। यह सामग्री विदेशी भाषा पाठ्यक्रम में अधिगम अनुवाद भूमिका, उपयोगिता, संबंध तथा अध्यापन,भाषा कौशल और रोज़गार जैसे प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर प्राप्त की गई है। चूँकि यह सभी विद्यार्थी अलग-अलग देशों के थे इसलिए इनकी संख्या काफी थी तथा यह सभी अलग-अलग भाषा परिवारों के थे अत इनसे प्राप्त सामग्री को अलग-अलग करके विदेशी और भारतीय की श्रेणी में विभाजित करके रखा गया, तथा प्राप्त सामग्री संकलन को एक अध्याय बनाकर अध्ययन किया गया है। सामग्री संकलन के दौरान भारतीय और विदेशी विद्यार्थियों से प्राप्त 60 प्रश्नावली का वर्गीकरण करके विश्लेषण और अध्ययन किया गया है जिसके लिए प्रस्तुत लघु-शोध कार्य में गणनात्मक, गुणनात्मक, तुलनात्मक और मात्रात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य के दौरान विषय से संबंधित साहित्य का गहन अध्ययन किया गया। लघु-शोध कार्य को पूरा करने के लिए विषय से संबंधित अनुवाद, भाषा-शिक्षण, विदेशी भाषा-शिक्षण आदि पर भारतीय और पाश्चात्य, प्रकाशित और वेब सामग्री तथा वेब पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया है।

शोध क्षेत्र

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य में विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अधिगम में अनुवाद की क्या भूमिका है यह प्रयास किया गया है। इस लघु-शोध कार्य का क्षेत्र सीमित है। इस लघु-शोध कार्य का अध्ययन तीन विश्वविद्यालयों के स्तर पर किया है जो इस प्रकार हैं

1. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , वर्धा।
2. अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
3. यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद, हैदराबाद।